मृच्छकटिक कालीन समाज-व्यवस्था

मृच्छकटिक कालीन सत्यता व्यक्त करने में कवि शूद्रक ने क्रान्तिकारी कदम उठाए हैं। उसने किसी की आलोचना की चिन्ता किए बिना सत्य सामने रखने का प्रयास किया है।

तत्कालीन समाज में जाति प्रथा दिखाई देती है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-यह मुख्यतः विभाजन था। उच्च जाति के लोग अपनी जाति पर गर्व करते थे। ब्राह्मण का स्थान सर्वोपरि था। शास्त्रानुसार उसे कुछ विशेष सुविधाएँ प्राप्त थीं। लोग अपनी जाति से भिन्न दूसरे कर्म भी करते थे। चारुदत्त ने पूर्वज जन्म से ब्राह्मण थे, किन्तु व्यापार आदि द्वारा विपुल सम्पत्ति अर्जित की थी। वे यज्ञादि अनुष्ठान करते थे तथा कूप, तड़ाग, धर्मशाला आदि भी बनवाते थे। चरित्रवान और विद्वान ब्राह्मण समाज में पूजनीय माने जाते थे (वसन्तसेना-पूजनीयो मे ब्राह्मणः)। दान देना, भोजन करना आदि ब्राह्मणों के काम थे। अपने कर्तव्य से भ्रष्ट ब्राह्मण अपने को हीनभावना से देखते थे। विदूषक (मैत्रेय) भी इसी प्रकार का था। स्त्रियों के विषय में कोई विशेष उल्लेख नहीं किया गया है।

वैश्य लोग सम्पन्न थे। व्यापार उन्नत अवस्था में था। देश-विदेश तक व्यापार फैला था। नौका आदि से दूर की यात्राएँ होती थीं। बैलगाड़ी से सामान इधर-उधर भेजा जाता था। लोगों को लाने-ले जाने में इनका प्रयोग होता था। वसन्तसेना बैलगाड़ी से ही उद्यान (कामदेवायतोद्यान) में गयी थी। व्यापार में अर्जित सम्पत्ति समाज के उपकार में भी लगाई जाती थी। शूद्र भी उच्च पदों पर नियुक्त होते थे। वीरक तथा चन्दनक इसी प्रकार के थे। समाज में चाण्डाल लोग भी थे। उनका काम दण्डप्राप्त व्यक्तियों का वध करना था। किन्तु वे चाण्डाल लोग भी सज्जन व्यक्ति का वध करने में हिचकिचाते थे।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार विशेष नहीं था। ब्राह्मण पढ़ते थे। शर्विलक के पूर्वज चारों वेदों के ज्ञाता थे। स्त्री-शिक्षा का प्रचलन

Scanned with CamScanner

सम्भवतः नहीं था। वे घरों में ही पढ़ती थीं। शकुन-अपशकुन भी माने जाते थे। चारुदत्त न्यायालय जाते समय अपशकुनों से घबड़ा जाता है।

पर्दा-प्रथा प्रचलित नहीं थी। वसन्तसेना द्वारा वधू बनाई गई मदनिका पर्दा नहीं करती है। अन्त में वसन्तसेना को भी 'वधू' बनाया गया है, परन्तु पर्दा का कोई संकेत नहीं है।

वेश्या-प्रथा बहुत अधिक प्रचलित थी। उनके दो भेद थे - गणिका और वेश्या। गणिकाएँ संगीत आदि के माध्यम से लोगों को प्रसन्न करके धन अर्जित करती थीं। वसन्तसेना भी इसी प्रकार की थी। वेश्याओं के साथ सम्बन्ध रखना साधारण (सामान्य) बात थी, किन्तु समाज में वेश्याओं की प्रतिष्ठा नहीं थी। इसीलिए शर्विलक वेश्याओं की निन्दा करता है।

दास-प्रथा और बन्धक-प्रथा थी। द्वितीय अंक में जुआ में हारा हुआ संवाहक अपने को बेचकर ऋणमुक्त होना चाहता है। वसन्तसेना के यहाँ अनेक दासियाँ ~~थे~~ इसी प्रकार बन्धक बनाकर रखी गई थी। इसी लिए अपनी ~~प्रेयसी~~ प्रेयसी मदनिका को छुड़वाने के लिए शर्विलक चोरी करके धन (स्वर्ण भाण्ड) लाता है।

जुआ खेलने का बहुत प्रचलन था। उसकी विभिन्न चालें और ढंग प्रचलित थे। उसमें हार-जीत का हिसाब रखा जाता था। जुये में लिए गये ऋण (कर्ज) को वापस करना पड़ता था। जुए के कुछ नियम भी प्रचलित ~~थे~~ थे।

मदिरालय भी। वहाँ लोग जाकर मदिरापान करते ~~थे~~ थे। मदिरा के विभिन्न रूप प्रचलित थे।

उपर्युक्त विवेचन का निष्कर्ष यह है कि मृच्छकटिक में तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण है।

Scanned with CamScanner